कव्वाली

तर्ज–पर्दा उठे सलाम हो जाये

जब धनी मेहरबां हो जाये, अपनी रूह पे कुर्बान हो जाए
धाम धनी मेरे मेहरबान, प्राण पिया रूह पे कुर्बान
मेहरबां मेहरबां मेहरबां

1–होती हैं रूहें जब दिलगीर तुम बिन,
होते हैं प्रीतम भी बेताब उन बिन
तुम हो दरिया मौज हैं हम, किस तरह हम जुदा हो जायें

2– अपने साहेब का है फुरमान ये ही,
शाद तूं एक बार कर तो सही
हम बुलाये वो न आये, किस तरह ये आसान हो जाये

3– नूरे जमाल इश्क सुराही लायें,
जाम रूहों को प्रीतम आप पिलायें
दिल हो मेरा इश्क तेरा, जामे इलाही में हम खो जायें

4– तेरी रहमत का ना है पार कोई,
तेरी उल्फत से न इन्कार कोई
तेरी मेहर बढ़ती जाये, बढ़ते बढ़ते सलाम हो जाये